राईजिंग नेचर फाउण्डेशन

RISING NATURE FOUNDATION

प्रगति आख्या वर्ष 2019-2020

PRESIDENT
Rising Nature Foundation
Bisalpur Road, Faridpur, Bareilly (U.P.)

'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन'

(भारत का तेजी से उभरता किसान व युवा नेटवर्क)

PRESIDENT
Rising Nature Foundation
Bisalpur Road, Faridpur, Bareilly (U.P.)

परिचय

भारत के सर्वागीण विकास के लिए किसान और युवा सबसे बडे मानव संसाधन है इसीलिए वे सामजिक परिवर्तन ,आर्थिक विकास तथा तकनीकी नवप्रवर्तन के मुख्य आधार भी माने जाते है।

'राईजिग नेचर फाउण्डेशन' मो0 मिर्धान, बीसलपुर रोड फरीदपुर, जिला-बरेली (उ0प्र0) इंडियन ट्रस्ट एक्ट 1882 के अंतर्गत पंजीकृत एक समाजसेवी ट्रस्ट/गैर सरकारी संगठन/एन0जी0ओ0 है। संस्थान अपने स्थापना वर्ष से ही किसानो व युवाओ के सर्वागीण विकास, समाज के उपेक्षित दलित, पिछडे वर्ग, विकलॉगों, अनुसूचित जाति व जनजाति एंव अन्य सामान्य वर्ग के कल्याण तथा उत्थान के लिए अपनी विभिन्न गतिविधियो के माध्यम से प्रयासरत है।इसी क्रम में 'राईजिगं नेचर फाउण्डेशन' रसायनिक खेती से होने वाले नुकसानों को मद्देनजर रखते हुए किसान भाइयो को प्रशिक्षित करते हुए जैविक कृषि विकास परियोजना का भी सफल संचालन कर रही है।

खेती की शुरूआत मानव सभ्यता के साथ में ही हुई थी। परन्तु उस समय यह पूर्णरूप से प्रकृति पर निर्भर थी। भारत में रसायनिक खादो से खेती की शुरूआत 1965 में हरित क्रान्ति के साथ हुई थी, परन्तु पिछले पॉच दशको में हरित क्रान्ति नुकसान देय साबित हुई है। रसायनिक खादों, कीटनाशको व खरपतवारनाशको के अंधाधुंध प्रयोग ने मिटटी, पानी और सम्पूर्ण पर्यावरण को प्रदूशित किया है। उस समय वैज्ञानिक समुदाय ने दीर्धकालीन परिस्थितियो में रसायनिक खादों के असर को अनदेखा करते हुए, रसायनिक खादों से की जाने वाली खेती को समर्थन दिया था। और सरकारी संस्थाओ ने इसको बढवा दिया था। यह सही है, कि हरित क्रान्ति ने देश की जरूरतों के मुताबिक खाद्यान्नो का उत्पादन किया लेकिन कुछ ही समय में कीट व रोगों ने फसलो पर आक्रमण कर दिया। तब फसल सरंक्षण के लिए जहरीली रसायनिक दवाओ का उपयोग होने लगा, जिससे प्राकृतिक संतुलन खो गया। हमारे सतर्क होने से पहले ही हमने अपनी सम्पन्न जैव-विविधता और संतुलित प्रकृति खो दी है। इस प्रकार हरित क्रान्ति प्रकृति से की गई लडाई थी और हम यह लडाई हार चुके है। अब हमारे सामने प्रकृति के सामने आत्म समर्पण करने का ही विकल्प बचा है। अत: कृषि वैज्ञानिको ने हाल ही के वर्षो में यूटर्न लिया है और अब वे जैविक खेती का ही समर्थन कर रहे है ।

जैविक अवधारणा

अनेक संभावनाओं व विकल्पो से भरे विश्व में अनेक किसानो, उधोजको व ग्राहको हेतु जैविक खेती एक गंभीर विकल्प है। अन्न उत्पादकता, खाद्यान्न सुरक्षा, खाद्य संप्रभुता तथा पर्यावरण की सुरक्षा एवं सुद्रढ़ता हेतु जैविक खेती को वैज्ञानिक आधार दिये जाने की आवश्यकता है। आज हमारे सामने सबसे बडी चुनौती है कि कैसे हम जैविक खेती को आधुनिक कृषि की सहयोगी के रूप में स्थापित करें और यह सुनिश्चित करें कि अनेक छोटे और मझोले किसान जो आज की वैज्ञानिक कृषि की दौड में पीछे रह गये है वे जैविक खेती के माध्यम से विकास की मुख्य धारा में शमिल हो रहे है।

लगभग एक शताब्दी की विकास दौड के बाद जैविक खेती अब मुख्य धारा से जुड रही है और सामजिक,

वााणिज्यिक तथा पर्यावरणीय दृष्टि से अपनी उपादेयता सिद्ध कर रही है। जैविक खेती की इस यात्रा में जहॉं विचारो की निरंतरता ने इसे एक स्थायित्व दिया है वही आज की जैविक खेती अपने पूर्व रूप से काफी अलग है। आज की जैविक खेती प्रणेताओं के स्वस्थ मृदा, स्वस्थ खाद्य तथा स्वस्थ समाज की अवधारण को समेटते हुए पर्यावरणीय दृष्टि से अधिक टिकाऊ तथा अधिक उत्पादन क्षम है।

'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' द्वारा संचालित जैविक कृषि विकास परियोजना जैविक खेती को आधुनिक कृषि की सहयोगी के रूप में स्थपित कराने तथा अनेक छोटे व मझोले किसान जो आज की वैज्ञानिक कृषि की दौड में पीछे रह गये है। उन्हे जैविक खेती के माध्यम से विकास की मुख्य धारा में शमिल कराने हेतु प्रयासरत है। विश्व में अपनी तरह के सबसे बडे जमीनी स्तर के स्वयंसेवी संगठन 'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' की स्थापना स्वयंसेवा, स्वयं सहायता एंव सह सहभागिता के सिद्धातों पर किसान भाईयो एंव युवाओ को सही दिशा देने और उनकी ऊर्जा को मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए की गई थी क्योकि हमारे किसान भाई और युवा एक अनिवार्य और गुंजायमान तथा परिवर्तनकारी महत्वपूर्ण मानव संसाघन है। जिनको भारत राष्ट्र की ही नही अपितु सम्पूर्ण विश्व के भविष्य की जिम्मेदारी सौपी जानी हैं।

'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' के लक्ष्य निम्नलिखित है :

ऽ न्यास द्वारा स्व0 ठाकुर नेत्रपाल सिंह भदौरिया के पद चिन्हो का अनुसरण करते हुए जनहित में लोगों का सामाजिक, मानसिक, नैतिक, चारित्रिक, शैक्षिक व बौद्धिक विकास करते हुए उनमे राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय एकीकरण व भाईचारा की भावना जाग्रत करना हैं।

ऽ न्यास द्वारा जैविक/ऑर्गेनिक कृषि से सम्बंधित सभी कार्य करना, कृषि एंव फसल चक्र से सम्बन्धित कार्यक्रम, सेमीनार आादि आयोजित करना और उन्नत खेती, बायो/ऑर्गेनिक खेती व समृद्व किसान हेतु कृषि उन्नत तकनीकी की जनकारी देना तथा डेयरी विस्तारीकरण करना।

ऽ न्यास द्वारा जन सामान्य को रसायनिक कृषि, पेस्टीसाइड, इनसेक्टीसाइड, वीडीसाईट हरवीसाईट के दुष्प्रभावों की जानकारी देना तथा बचाव हेतु बायो ऑर्गेनिक फर्टीलाइजिंग को प्रमोट करना।

ऽ न्यास द्वारा किसान भाईयों को जैविक खाद, जैविक कीट बचाव बनाने की जानकारी, बायो गैस की जानकारी देना तथा जैविक क्लब / समूह की स्थापना व संचालन करना तथा जैविक कृषि मेले का आयोजन करना।

ऽ समाज को नई दिशा दिखाने हेतु युवाओ को संगठित करके तथा उनकी सुप्त क्षमताओ को जाग्रत करते हुए सामजिक व कल्याणकारी कार्यों में लगाना ताकि स्वस्थ निर्मल एंव स्वावलम्बी राष्ट्र का सपना साकार हो सके।

ऽ ऊसर – बन्जर भूमि को उपजाऊ योग्य बनाने हेतु हर सम्भव प्रयास करना ।

ऽ औषधीय पौधों की किसान व जनसामान्य को जानकारी देना व इसकी खेती कराने हेतु प्रचार-प्रसाार करना।

ऽ न्यास द्वारा पशु/सुरभि कल्याण एंव पशु /सुरभि संरक्षण हेतु प्रयत्न करना एंव पशुओं की स्वास्थ्य रक्षा हेतु प्रयत्न करना।

ऽ ग्रामीण युवाओं को राष्ट्र निर्माण एंव सामजिक गतिविधियो में शमिल करना नैतिक मूल्यो और क्षमता का

PRESIDENT
Raising Nature Foundation
Bisalpur Road, Faridpur, Bareilly (U.P.)

विकास करना जिससे वे आधुनिक भारत के एक उत्पादक और जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

ऽ जातिपाति, रंग-लिंग और धर्म में भेदभाव के बिना राष्ट्र की सेवा में समान अवसर प्रदान करने हेतु उचित वातावरण के निर्माण की दिशा में कार्य करना ।

ऽ संसधनो में आत्म निर्भरता का अनुसरण करना ।

ऽ रोजगार सृजन, साक्षरता और परिवार कल्याण, पर्यावरण संतुलन जैसे उच्च प्राथमिकता वाले क्षेत्र में कार्यक्रमों के प्रोत्साहन और विकास के लिए राईजिंग नेचर फाउण्डेशन के नेटवर्क का उपयोग करना।

ऽ शिक्षा बेहतर स्वास्थ्य केन्द्र और विविध आमदनी सृजन गतिविधियों को शामिल कर और उसका दायरा विस्तृत करते हुए महिलाओं को सशक्त बनाना।

इस प्रकार एक अग्रणी सामजिक संगठन के रूप में 'राईजिगं नेचर फाउण्डेशन' गैर छात्र ग्रामीण युवाओं को ध्यान में रखते हुए विकास गतिविधियों एवं लोगों को एकजुट करने के लिए गैरसरकारी क्रियान्वयन संस्था के रूप में कार्य करता है।

गैर छात्र ग्रामीण युवाओ (लक्ष्य समूह) की आवश्यकताओं इच्छाओं एंव आंकाक्षाओ को पूरा करने के उद्देश्य से प्रशिक्षित कॉर्डर के युवा समन्वयकों, युवा नेताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओ के माध्यम से कार्यक्रम एवं गतिविधियां आयोजित की जाती हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्तरो पर विभिन्न संस्थाए एंव विभाग इसमें शामिल होते है जिससे कि विकासात्मक योजनाओ का लाभ समाज के जरूरतमंद लोगों तक पहुँच सके।

राईजिगं नेचर फाउण्डेशन शासीबोर्ड की सूची 2019-2020

श्री दिनेश प्रताप सिंह भदौरिया	अध्यक्ष/संस्थापक	समाज सेवा
श्रीमती अर्चना सिंह	सचिव	समाज सेवा
श्री अजय प्रताप सिंह	प्रबधक	प्रोफेसर एवं समाज सेवक

राईजिगं नेचर फाउण्डेशन के मैनेजमेन्ट बोर्ड का गठन प्रतिवर्ष साधारण सभा के द्वारा शासीबोर्ड के निर्देश में किया जाता है

इसके साथ ही 'राईजिगं नेचर फाउण्डेशन' महिला सशक्तिकरण व राष्ट्रीय एकीकरण को भी बढावा दे रही है। वर्ष 2019-2020 में कुल प्राप्ति व भुगतान 4593012.00 रूपये रहा है संस्था द्वारा वर्ष 2019-2020 में किये गये सामाजिक कार्यो का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

1. जैविक कृषि विकास परियोजना

संस्था द्वारा इस परियोजना पर वर्ष 2019-2020 में 2452632.00 रूपये खर्च किये गये। राष्ट्रहित व जनहित में ऑर्गेनिक कृषि के दीर्घावधि लाभों को देखते हुए ऑर्गेनिक जैविक कृषि के संवर्धन के लिए संस्थान ने **जैविक कृषि विकास परियोजना** नामक पॉयलट प्रोजेक्ट का शुभारम्भ अपने स्थापना के समय से ही किया था जो कि भारत को रसायानिक हरित क्रान्ति से सदाबहार जैविक हरित क्रान्ति की ओर अग्रसारित कराने हेतु कृत संकल्पित है।

किसी भी खेत को पारंपरिक खेती से जैविक खेती की ओर उन्मुख करने के लिए सबसे पहला कदम है उस मिट्टी की खोई उर्वरता की पुनर्स्थापना। इसके लिए आवश्यक है रसायनिक उर्वरको के प्रयोग पर पूर्ण प्रतिबंध तथा

PRESIDENT
Rising Nature Foundation
Bisalpur Road, Faridpur, Bareilly (U.P.)

जैविक व जीवाणु उपादानों तथा जैविक प्रक्रियाओ का अधिकाधिक प्रयोग।

राईजिंग नेचर फाउण्डेशन ने जैविक कृषि विकास परियोजना का सहयोगी संस्थाओ (1) सांईनाथ जाग्रति ग्रामीण विकास संस्थान, सेक्टर सी, बुद्ध बिहार कालोनी, एल. आई. जी. बी. 175, तारामण्डल रोड, गोरखपुर (उ.प्र.) एवं (2) सोसाइटी ऑफ राईजिंग यूनिवर्स, इन्द्रा नगर, बरेली (उ.प्र.) के माध्यम से बस्ती मण्डल में शुभारम्भ कराया और बस्ती व संतकबीरनगर जनपदो में बेहतरीन रिजल्ट प्राप्त कियें। बस्ती एंव बरेली मण्डल के अलग-अलग ब्लाकों में पॉच-पॉच ग्राम पंचायतों पर एक-एक जैविक कृषि मित्र को नियुक्त करके जैविक कृषि क्लब की स्थापना कराकर किसान भाईयों को रसायनिक खेती से नुकसान व जैविक खेती की आवश्यकता को समझाते हुए उन्हें विषमुक्त जैविक खेती के लिए जागरूक किया गया। इसके अतिरिक्त किसान भाईयों को जैविक कृषि की विभिन्न विधाओं की जानकारी दी गई कि किस प्रकार से आप अपने आसपास की चीजों सें कृषि के लिए आवश्यक शक्तिशाली जैविक खाद बना सकते हों और जो किसान भाई नही बना सकते हैं। उन्हें ऑर्गेनिक खादों की उपलब्धता को सब्सिडी पर जैविक कृषि क्लब के माध्यम से सुगम बनाया गया।

जैविक कृषि विकास परियोजना के क्रियान्वयन हेतु आवश्यक संसाधन जैसे मानव संसाधन हेतु प्रशिक्षण देने वाले निपुण प्रशिक्षक/विशेषज्ञ उपलब्ध हैं एवं आवश्यकतानुसार नियुक्त भी किये जाते हैं इस कार्य में सहयोग देने के लिए देश के विभिन्न संस्थानों के कृषि वैज्ञानिक, उत्कृष्ठ किसान, प्रयोगधर्मी किसान, कृषि विशेषज्ञ, लेखक आादि लोग भी अपना यथोचित सहयोग देकर राईजिंग नेचर फाउण्डेशन के इस प्रोग्राम को लाभान्वित कर रहे है जैविक कृषि विकास परियोजना को निम्न चरणो में विभाजित किया गया है।-

1 प्रत्येक जिला स्तर पर उचित क्षेत्रीय समाज सेवी संस्था का मानक अनुरूप चयन कर कार्यभार सौपना।

2 चयनित संस्था द्वारा प्रत्येक पॉच ग्राम पंचायतो पर एक मानक अनुरूप जैविक कृषि क्लब स्थापित किया जाना।

3 जैविक कृषि विकास परियोजना का सुचारू रूप से कार्यान्वित कराने हेतु चयनित संस्था द्वारा मानक अनुरूप एक जिला कोआर्डिनेटर और प्रत्येक ब्लॉक पर एक-एक ब्लॉक कोआर्डिनेटर चयनित कराना और पूरी परियोजना की मॉनीटरिंग सुनिश्चित करना।

4 जैविक कृषि क्लब के परिक्षेत्र में जैविक कृषि मित्र की नियुक्ति सुनिश्चित कराकर प्रत्येक गॉव में 20-30 किसानों का एक-एक एकड जमीन के साथ चार वर्षों के लिए सदस्य बनना सुनिश्चित करना।

5 जैविक कृषि क्लब द्वारा सदस्य किसान भाईयों को समय-समय पर निम्नलिखित विषयों पर प्रशिक्षण के लिए हर सम्भव प्रयास करना।

- ऽ रसायनिक खेती से नुकसान एंव जैविक खेती की आवश्यकता।
- ऽ मृदा के अवयव एंव मृदा स्वास्थय के मानक।
- ऽ ऑर्गेनिक खेती में मुख्य फसल और सहफसलो/अंतरवर्ती फसलों का चुनाव।
- ऽ ऑर्गेनिक खेती मे मृदा का शोधन।
- ऽ ऑर्गेनिक खेती में बीजो की भूमिका एवं इनका चुनाव।
- ऽ बुवाई से पूर्व बीज उपचार के तरीके।

PRESIDENT
Rising Nature Foundation
Bisalpur Road, Faridpur, Bareilly (U.P.)

ऽ ऑर्गेनिक खेती में खरपतवार की पहचान और इनका प्रबंधन।

ऽ जल प्रबंधन के तरीके एवं सिचाईं के आधुनिक तरीकों की जानकारी।

ऽ फसल पोषण प्रबन्धन, जैविक खाद और पोषक रसायनों का निर्माण।

ऽ जैविक खेती मे फसल सुरक्षा।

ऽ समेकित कीट एवं रोग प्रबन्धन।

ऽ ऑर्गेनिक खेती में खाद्य भण्डारण।

ऽ ऑर्गेनिक खाद्यान का मूल्य संवर्धन।

ऽ ऑर्गेनिक खाद्यान और उत्पादों की मार्केटिंग।

ऽ ऑर्गेनिक खेती में प्रमाणीकरण और इसका महत्व।

ऽ अग्निहोत्र, जैवगतिकीय खेती, शिवयोग कृषि इत्यदि पद्वतियों की जानकारी।

6 किसानो की आय संवर्धन हेतु प्रमाणीकरण के पश्चात औषधीय, सुगंध व नकदीय फसलों की कान्ट्रेक्ट खेती (आंर्गेनिक आधार पर) की व्यवस्था करना ।

जैविक फसलों से लाभ में वृद्धि करने के लिए उन्हे वैज्ञानिक तरीके से उगाना भी महत्वपूर्ण हैं इसीलिए ऑर्गेनिक कृषि के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराने के लिए जैविक कृषि मित्र के माध्यम से किसान भाईयों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं कि बिना उत्पादन प्रभावित किए वैज्ञानिक तरीके से जैविक खेती कैसे की जाये ? रसायनिक खादो के स्थान पर जैविक खादों का इस्तेमाल कब, कैसे और कितनी मात्रा में करें और अपने उत्पाद का अधिकतम मूल्य कैसे प्राप्त करे।

2. पशु संरक्षण जागरूकता अभियान

संस्थान द्वारा इस कार्यक्रम पर वर्ष 2019-2020 में 136524.00 रूपये खर्च किये गये है। पशुओ के अधिकारो के लिए काम करने वाले वैसे तो बहुत से लोग है ये सभी लोग अलग-अलग अपने स्तर पर कार्य करते है और अनेको समस्याओ से रोज जूझते हैं। राईजिंग नेचर फाउण्डेशन इस कार्यक्रम के माध्यम से सभी को एक मंच पर लाने को निरन्तर प्रयत्नशील हैं। संस्थान ने सहयोगी संस्था आधार ग्रामीण शिक्षा समिति के सहयोग से उक्त कार्यक्रम का शाहजहाँपुर व पीलीभीत के ग्रामीण क्षेत्रो आयोजन किया। शिविरो में लोगो को पशुओ के स्वास्थ्य एंव सुरक्षा व उनके पालन पोषण तथा उनकी उपयोगिता की जानकारी दी गई तथा पशुओ के स्वास्थ्य से सम्बधित परीक्षण डाक्टरों की कुशल टीम के द्वारा किया गया परीक्षण के दौरान पशुओं की निशुल्क दवाओं का भी वितरण किया गया ।

आज कल बहुतायत में पशु-पक्षियों के प्रति हिंसात्मक व्यवहार देखने में आ रहा है। नकारात्मक मनोरंजन, स्वाद लोलुपता के साथ ही धर्म के नाम पर भी पशु-पक्षियों की जान ले ली जाती है। इस तरह के कृत्यो को सामूहिक प्रयासो से रोका जा सकता हैं समाज में जीवो के प्रति संवेदना जगाकर क्रूरतापूर्ण व्यवहार को कम किया जा सकता हैं। पशु-पक्षियों के साथ क्रूरता करने पर सख्त कार्यवाही जरूरी हैं लोगो को समझाया गया कि सड़को पर वाहन चलाते समय अपनी गति नियत्रित रखें, क्योंकि ये जानवर जख्मी होने के बाद अक्सर अस्पताल तक नही जा पाते और न ही इन्हें कोई मेडीकल सहायता मिल पाती हैं।

PRESIDENT
Rising Nature Foundation
Bisalpur Road, Faridpur, Bareilly (U.P.)

Scanned with OKEN Scanner

लिए टीकाकरण की व्यवस्था सहयोगी संस्था 'सोसायटी आफॅ राईजिंग यूनिवर्स' के विशेष सहयोग से की गई।

'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' द्वारा बरेली शहर व ग्रामीण क्षेत्रो में, मलिन बस्तियों में निर्धन बच्चों के स्वास्थ्य परीक्षण डाक्टरों की कुशल टीम के द्वारा किया गया। परीक्षण के दौरान टीकाकरण, पल्स पोलियो ड्राप्स, विटामिन ए की कमी तथा कुपोषण के शिकार बच्चों को मुफ्त दवायें तथा पौष्टिक आहार का वितरण किया गया।

इस कार्यक्रम की एक कड़ी 'स्वस्छता अपनाओं बीमारी भगाओं' विषय वस्तु पर दो दिवसीय जन जागरूकता कार्यक्रम के दौरान बिथरी चैनपुर ब्लॉक के कलारी गांव में एवं भदपुरा ब्लॉक के बिहारीपुर अब्दुलरहमान गांव में घर-घर जाकर बच्चों को बुलाया और एकत्रित किया। जिसमें लड़के और लड़कियों दोनों ने ही भाग लिया और गांव के बच्चों को सरलतम भाषा में डायरिया, कालरा, टीवी और दमा जैसी बीमारियों के बारे में संक्षिप्त रूप से आवश्यक बाते बताई। उन्हे ये भी बताया गया कि वे कैसें अपने आसपास को स्वच्छ रख सकते हैं और बीमारियो से बच सकते हैं। सभी बच्चों ने बहुत ही ध्यान से सुना, प्रश्नोत्तर किया और स्वीकार किया कि इस स्वच्छता ज्ञान को अपनाकर बीमारियों से बचा जा सकता हैं और आगे भी इस तरह के सतत् जागरूकता कार्यक्रम होते रहेगे जिससे ज्यादा सें ज्यादा लोगों को इसका लाभ मिलें।

4 उपभोक्ता संरक्षण कार्यक्रम

'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' द्वारा इस सतत् कार्यक्रम पर वर्ष 2019-2020 मे 35000.00 रूपये खर्च किये गये। 'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' द्वारा प्रतिवर्ष 15 मार्च को 'उपभोक्ता दिवस' पर जनपद बरेली के विशारतगंज विकास खण्ड के ग्रामों में उपभोक्ता जागरूकता रैली का आयेजन किया गया। इसके अतिरिक्त ग्रामीणों को सरकार द्वारा उपभोक्ताओं को मिलने वाली सहायता के बारे मे तीन दिवसीय कैम्प के आयोजन के द्वारा जागरूक किया गया। क्योंकि अधिकतर ग्रामीण ही इसके शिकार होते हैं। घटतौली, मानक स्तर की साम्रगी और उचित मूल्य आादि के प्रति उन्हें सचैत किया गया ।

5 औषधीय/सगन्ध कृषि जागरूकता कार्यक्रम

'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' द्वारा इस सतत् कार्यक्रम पर वर्ष 2019-2020 में 825367.00 रूपये खर्च किये गये। 'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' कृषि को उद्योग के रूप में परिवर्तित करते हुए औषधीय/सगन्ध कृषि जागरूकता कार्यक्रम का संचालन बरेली मंडल के विभिन्न भागों में किया गया। जनपद पीलीभीत के बरखेडा ब्लांक में राम औतार मौर्य जैविक कृषक के नेतृत्व में विभिन्न औषधीय फसलों की खेती व ट्रेनिंग प्रोग्राम संचालित किये गये। इसके अतिरिक्त 'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' ने औषधीय /सगन्ध फसलों की वास्तविक प्रत्यक्ष ट्रेनिंग हेतु बरेली के विशारतगंज विकास खण्ड के धीरपुर गांव में 30 बीघा का फार्म हाऊस लीज पर लेकर विभिन्न प्रकार के जैविक प्रयोग करते हुए सतावर, मिल्क थिसिल, पपीता, हल्दी, काली हल्दी और मोरिंगा का आधुनिक मॉडल तैयार कर प्रदार्शित किया गया। साधारणतया भारत एवं पूरे विश्व में औषधीय एंव सुगंधित पौधो की मांग निरन्तर बढ़ रही है इस विषय पर कार्य कर रहे दुनिया भर के वैज्ञानिकों का मत है कि इस मांग में निरन्तर बढ़ोत्तरी की संभावनाएँ हैं।

भारत में लगभग 8 हजार करोड रूपये की औषधीय पौधें से बनी दवाओं का बाजार है। अभी लगभग 80 प्रतिशत औषधीय पौधें प्राकृतिक स्त्रोतो से प्राप्त किये जाते है। परन्तु जंगलों के कट जाने और बढती हुई मांग के कारण प्राकृतिक स्त्रोतो से औषधीय पौधों की मांग को पूरा करना कठिन होता जा रहा हैं। अनेक औषधीय पौधें तो दुर्लभ हो गये है और अनेक पौधों की प्रजातियां विलुप्त हो गई हैं।

PRESIDENT
Rising Nature Foundation
Bisalpur Road, Faridpur, Bareilly (U.P.)

Scanned with OKEN Scanner

औषधीय/सगन्ध कृषि जागरूकता कार्यक्रम के तहत शिविरो व धीरपुर फार्म प्रोजेक्ट के माध्याम से किसान भाईयों को खेती की सुविधा के लिए कुछ औषधीय पौधों का वर्गीकरण फसल में लगने वाले समय एवं उनके प्रकार के आधार पर करके समझाया गया। औषधीय पौधों की खेती प्रारम्भ करने के पहले भूमि का चुनाव फसल के आधार पर करना आवश्यक है। मूलत: इस कार्य के लिए बेकार पड़ी भूमि का प्रयोग करना अच्छा रहता हैं। परम्परागत धान/ सब्जी की खेती में उपयोग की जाने वाली भूमि का उपयोग वनोषधियों की खेती में प्रारम्भ करने से बचना चाहिए। अतिरिक्त या उपयोग में न आने वाली भूमि से प्रारम्भ करने से हानि से बचा जा सकता हैं। टांड या ऊंची जमीन जहाँ पानी का अभाव हो, ऐसी फसल लगाने, का प्रयास करे, जिसमे सिचाई की व्यवस्था न हो केवल वर्षा जल पर ही निर्भर हो जैसे अश्वगंधा, वासक, मस्कदाना, शतावर इत्यादि। जबकि जलमग्न या नमी की अधिकता वाली भूमि पर ब्राम्ही, वच, भृगंराज जैसी फसल लेना उपयुक्त रहता हैं।

किसान भाइयों को समझाया गया कि औषधीय पौधों की मिश्रित खेती में अधिक आमदनी एवं कम खतरे हैं। विभिन्न अवधि में तैयार होने वाली इन फसलों से निरंतर आमदनी ली जा सकती हैं।

6 महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम

संस्था द्वारा इस सतत् कार्यक्रम पर वर्ष 2019-2020 में 152632.00 रूपये खर्च किये गये। अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर अर्बन कोऑपरेटिव बैक, डी0डी0 पुरम, बरेली के सभागार में महिला सशक्तिकरण को लेकर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमे महिलाओं नें अनेक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देने के अलावा अपने विचारो को साझा किया। जिसमें महिलाओं ने रोजगार से जुड़कर स्वावलंबी बनने व परिवार की देखभाल के साथ-साथ समाज को दिशा देने पर बल दिया।

दीन दयाल पुरम, बरेली मे स्थित अर्बन कोऑपरेटिव बैक के सभागार मे आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डिप्टी डायरेक्टर, महिला एवं बाल विकास श्रीमती नीता अहिरवार ने महिलाओं से आत्माविश्वास के साथ संगठित होने व एकता पर बल देते हुए कहा कि महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए आगे बढ़ना होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षा श्रीमती अर्चना सिंह ने कहा कि महिला किसी से कम नही है, केवल मजबूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता हैं। आज के युग में महिलाओं पर बडी जिम्मेदारी है कि वह स्वयं के साथ-साथ अन्य महिलाओं को भी विकास के लिए प्रेरित करें। राईजिंग नेचर फाउण्डेशन के प्रोजेक्ट डायरेक्टर श्री डी0पी0 सिंह भदौरिया ने नारी को प्राथमिकता देते हुए कहा कि 21 वी शताब्दी को महिलाओं की शताब्दी के रूप में जाना जायेगा। महिला प्रत्येक क्षेत्र में खुद को साबित कर रही हैं। कार्यक्रम में जनपद के अन्य ब्लॉको से भी आई महिलाओं ने भी भाग लिया।

'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' ने निशुल्क 60 महिलाओं को सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण प्रदान किया एवं 21 जरूरत मंद महिलाओं को सिलाई मशीन वितरित की गई, ताकि वे स्वावलम्बी बन सके।

7 विश्व पर्यावरण दिवस

'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' ने इस कार्यक्रम पर वर्ष 2019-2020 मे 58263.00 रूपये खर्च किये गये हैं। संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित यह दिवस पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर जागरूकता लाने के लिए मनाया जाता है। इसकी शुरूआत 1972 में 5 जून से 16 जून तक संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन सें हुई। 5 जून 1973 को पहला विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। 'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन ने अपने धीरपुर के

PRESIDENT
Rising Nature Foundation
Bisalpur Road, Faridpur, Bareilly (U.P.)

Scanned with OKEN Scanner

फार्म हाऊस पर आसपास के गांवो के लोगों को इकट्ठा करके पर्यावरण की महत्वता के बारे में बताते हुए सभी को एक-एक फलों के पौधे वितरीत किये गये। 'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' के अध्यक्ष व प्रोजेक्ट डायरेक्टर श्री डी0पी सिंह भदौरिया ने बताया कि मानव और पर्यावरण एक दूसरे पर निर्भर होते है। पर्यावरण जैसे जलवायु प्रदूषण या वृक्षों का कम होना, मानव शरीर और स्वास्थ्य पर सीधा असर डालता है। मानव की अच्छी-बुरी आदतें जैसे वृक्षों को सहेजना, जलवायु प्रदूषण रोकना, स्वच्छता रखना भी पर्यावरण को प्रभावित करती हैं। मानव की बुरी आदतें जैसे पानी दूषित करना, बर्बाद करना, वृक्षों को अत्यधिक मात्रा में कटाई करना आदि पर्यावरण को बुरी तहत से प्रभवित करती है। जिसका नतीजा बाद में मानव को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करके भुगतना ही पड़ता हैं।

8 धीरपुर ऑर्गेनिक फार्म

'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' ने इस कार्यक्रम पर वर्ष 2019- 2020 में 335263.00 रूपये खर्च किये गये हैं। आम के आम गुठलियों के दाम वाली कहावत आपने जरूर सुनी होगी, कुछ किसानों पर यह कहावत लागू होती हैं। बड़े शहरों में हवा, पानी और भोजन पूरी तहत से दूषित है, हम जो खा रहे हैं वह भी जहर समान हैं ऐसे में इस तरह की खेती का कान्सेप्ट अद्भुत हैं।

किसान भाईयों को जैविक खेती के लिए प्रोत्साहित करते हुये अकसर 'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' के सामने एक सवाल बार-बार परेशन कर रहा था, कि पहले हमें कोई सफल जैविक किसान से मिलवाओं या पहले और लोगों को करने दो, जब कोई हमारे गांव में सफल हो जायेगा, तब हम अगले साल करेगें। इस समस्या से निजात पाने तथा किसान भाईयो को प्रत्यक्ष जैविक खेती का प्रशिक्षण देने हेतु 'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' ने बरेली जनपद के धीरपुर गांव में एक 30 बीघा का फार्म हाऊस लीज पर लेकर आसपास के सभी किसान भाइयों के लिए जैविक खेती की मिसाल कयम की और वर्मीकम्पोस्ट, मशरूम की खेती, पराली मैनेजमेन्ट, मिश्रित खेती में फसल का चुनाव व प्रत्यक्ष प्रयोग करके दिखाये गये। सभी किसान भाईयो ने 'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन' के प्रयासो को सराहा और अनुसरण करने का संकल्प लिया ।

अध्यक्ष

'राईजिंग नेचर फाउण्डेशन'

PRESIDENT
Rising Nature Foundation
Bisalpur Road, Faridpur, Bareilly (U.P.)